सादर नमन!

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

अपने समाज को पिछले वर्षों में तीन विभूतियों के न रहने से अकथनीय क्षति पहुँची है। इन तीनों महानुभावों की स्मृति में अपने संस्मरण द्वारा मैं नमन प्रस्तुत करता हूँ।

सबसे पहले श्री प्रकाश चन्द्र चतुर्वेदी एडवोकेट के विषय में। वह मेरे बड़े नाना बछोली लाल जी (सिकन्दरपुर) के सबसे छोटे भाई मुन्नीलाल जी (जो कक्का के नाम से सर्व सम्मानित थे) के एकमात्रा पुत्रा थे।

एक पेशेवर वकील के लड़के होने के नाते प्रकाश भाई की रुझान बचपन से ही वकालत की प्रेक्टिस में थी। कानून की डिग्री शीघ्र ही हासिल करने के बाद उन्होंने फत्तेहगढ़ में अपनी वकालत शुरु की। प्रखर बुद्धि, दिन रात मेहनत और खरी ईमानदारी के कारण उनकी गिनती चोटी के वकीलों में होने लगी। जिला अदालत में जायदाद का दीवानी मामला हो या फौजदारी का मुकदमा, सब मसलों में उनकी राय की बहुत कद्र होती थी। साथी वकील, मुवक्किल, पैरोकार हों या जज मजिस्ट्रेट। सब सलाह के लिये उनके दरवाजे खटखटाते थे। साठ वर्ष से अधिक अवधि की अपनी कानूनी प्रेक्टिस में उन्होंने बहुत नाम कमाया।

प्रकाश भाई की दिनचर्या में जिस प्रकार कचहरी का अभिन्न स्थान था, उसी प्रकार वहॉ के स्थानीय टेनिस कोर्ट भी उनके रोजमर्रा का एक अटूट भाग थे। बिन नागा हर शाम अपनी स्फूर्ति तथा शारीरिक मुस्तैदी के साथ टेनिस का रैकेट उठा लेते थे।

रैकेट के साथ उनकी मौजूदगी स्थानीय क्लबों में नवयुवकों के लिए एक चुनौती थी। आयु में उनसे आधे खिलाड़ियों को भी उनसे जीत पाना एक टेढ़ी खीर होता था। सरकारी अफसर तथा राजपूत रेजीमेन्टल सेन्टर के फौजी अफसर टेनिस कोर्ट में उनके खेल के कायल थे। पैंसठ सत्तर वर्ष की आयु पार करने के बावजूद भी अपने बदन में होने वाले कोई भी दर्द को टेनिस कोर्ट में पहुँचने के बाद भूल जाते थे। कोर्ट के एक छोर से नेट तक उन्हें भागते देख उनके विरोधी हैरान रह जाते थे।

हिन्दी साहित्य और विशेषकर काव्य संग्रहों में प्रकाश भाई की विशेष रुचि थी। कविताओं को बहुत चाव से सुनते थे और स्वयं पढ़ते भी। भक्ति और वीर रस की रचनाओं के खास तौर से शौकीन। गला बहुत अच्छा था। ओज पूर्ण आवाज में सुनाये गए उनके कविता पाठ में मृत शरीर में भी जान फूँक देने की क्षमता थी। सूर रसखान के भक्तिरस में डूबे छन्द हों या फिर भूषण या सुभद्र कुमारी चौहान की वीरता से ओत–प्रोत रचनाएँ। उस ह्रदय स्पर्शी मंचन को सुनने के लिए सब लालायित रहते थे। बचपन में प्रकाश भाई से सुनी वह पंक्तियॉ जीवन पर्यन्त कान में गूंजती रहेंगी।

उनकी एक अन्य विशेषता उनका सरल सहज स्वभाव था। सफल वकील के रूप में अदालतों में चालाकी, धोखाधड़ी तथा दिन रात कानूनी दॉव–पेचों को देखने के अभ्यस्त प्रकाश भाई अपने व्यक्तिगत जीवन में बहुत सीधे तथा सच्चे इन्सान थे। छलकपट तथा दुहरी ख्याल से बिल्कुल परे। बच्चों से उन्हें

बहुत स्नेह था। शायद ही किसी ने उन्हें कभी नाराज़ देखा हो। स्वभाव से बहुत धार्मिक थे। सबकी यथासंभव मदद करने को सदैव तत्पर। स्थानीय चतुर्वेदी समाज के वह संरक्षक और कीर्ति स्तंभ भी। फतेहगढ़ के समीपवर्ती जिलों तथा ग्रामों में बसे समाज के सदस्यों की सहायता से कभी पीछे न हटने वाले।

प्रकाश भाई की बेदाग छवि, कानून की गहरी जानकारी तथा विश्वसनीयता देखकर मेरे बाबा निर्मलचन्द्र जी ने साठ के दशक में उन्हें उत्तर प्रदेश की अपराध निरोधक समिति की जिला कमेटी का संयोजक नियुक्त किया था। कम उम्र के वकील को यह सम्मानजनक ओहदा मिलना प्रकाश भाई की कर्मठता और काब्लियत का एक औपचारिक प्रमाणपत्रा था।

अपने भरे–पूरे परिवार में प्रकाशभाई सबके सम्मान पात्रा थे। मेरे नाना कालिका प्रसाद जी की वह बहुत इज़्जत करते थे। उनकी सलाह और इच्छा को शिरोधार्य मानते थे। दोनों में परस्पर बहुत नजदीकी सम्बन्ध थे। मेरी मॉ (प्रमिलाजी) के वह प्रिय चाचा थे। बचपन से ही हम सबके हृदयों में उनके लिए विशेष आदर और स्नेहपूर्ण स्थान था।

कुछ महीनों अपने निधन से पहले से वह अस्वस्थ चल रहे थे। टेनिस के मैदान में अपने विरोधियों के मुकाबले से कभी पीछे न हटने वाले और जज के सामने विपक्ष के वकीलों को पानी पिला देने के अभ्यस्त प्रकाश भाई ने 14 जनवरी को इस आखिरी लड़ाई में शिकस्त उठाई। पूरी दिलेरी और शालीनता के साथ।

दो अन्य विशिष्ट सदस्यों का आकस्मिक निधन न केवल उनके परिवारजनों वरन सब परिचितों तथा सहयोगियों के लिए एक असीम क्षति है। इन दोनों का अधिकांश जीवन बम्बई में गुज़रा था और दोनों का ही भारतीय स्थल सेना से निकट सम्बन्ध रहा था।

केप्टन संतोष कुमार ने 1962 के भारतीय चीन युद्ध के बाद इमरजेन्सी कमीशन के रूप में आरटीलरी फौज में प्रवेश लिया। तोपखाने की एक लाइट रेजीमेन्ट में कार्यरत रहकर उन्होंने बहुत ही फायदेमन्द अनुभव कमाया जो बाद के उनके केरियर में पर्याप्त लाभप्रद साबित हुआ।

कप्तान की रैंक से स्थल सेना की वर्दी उतारने के बाद संतोष जी ने बम्बई को अपना कार्यक्षेत्रा चुना। अपने बलबूते पर उन्होंने एक विशिष्ट स्थान बनाया। महेन्द्रा ग्रुप की कंपनियों में काम करते हुए उन्होंने व्यवसायिक क्षेत्रा में प्रशंसनीय कार्य करके इज्जत हासिल की। अपने सहयोगियों के बीच उनके सरल स्वभाव, विनोदप्रियता और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार के कारण सब उनको अपना सगा मानते थे। उनमें दिखावा नाम मात्रा को न था।

बम्बई की स्थानीय सभा के लिए संतोष भाई का योगदान ठोस तथा विश्वसनीय था। उनके सुझाव कार्यकारी होते थे तथा उनका नजरिया सदैव सकारात्मक। जरूरत पड़ने पर वह अपने विचार बहुत सरलता से पेश कर देते थे। किसी मनोमालिन्य की संभावना ही नहीं रहती थी। बम्बई में वैध सुरेश चन्द्र जी की अध्यक्षता में हुए महासभा अधिवेशन में एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में उनके योगदान की

सबने सराहना की। वैध सुरेश जी के पुत्रा पीयूष के विवाह में बम्बई से हैदराबाद की बारात में संतोष जी के साथ हॅसी मजाक में गुज़रे समय की याद कभी धूमिल नहीं होगी।

महेन्द्रा ग्रुप में कार्य करने के बाद अवकाश ग्रहण करने के बाद भी संतोष भाई के अनुभव से लाभ उठाने के लिए उनकी डिमांड बनी रही। अपनी पत्नी प्रमिला जी की अकाल मृत्यु का धक्का उन्होंने बहुत साहस से बरदाश्त किया। देश में तथा बाहर अमरीका में भी वह सक्रिय रहे। अमरीका में उनकी लड़की प्रीती के पास जाने पर भी वह घर पर खाली बैठने वालों में नहीं थे। काम धंधे से कभी हाथ पीछे नहीं खींचा। पिछले कई वर्षों में दिल्ली आने पर व्यस्त रहने के बावजूद मेरे यहॉ आने का समय सदैव निकाल ही लेते थे। उनके जैसे जिन्दादिल विरले ही देखे हैं।

ब्रिगेडियर अखिल से मेरा पहला सामना खड्गवासला स्थित नेशनल डिफेन्स अकादमी में जून 1970 में हुआ। मैं उनसे छह महीने पहले वहॉ पहुॅचकर दूसरे टर्म में था, जब उन्हें वहॉ दाखिला मिला। सूडान ब्लॉक की आलीशान इमारत के दूसरी मंजिल चढ़ते समय मेरे सहयोगी गौतम (एयर कांमोगेर के पद से सेवा निवृत) ने अनिल का परिचय कराया था। ऑखों की चमक और ओठों की मुस्कराहट लिए फुर्तीले शरीर का वह चेहरा अब तक यादों में ताजा है। उस समय हुई वह जान–पहचान आगे के वर्षों में और पुख्ता हो गई।

एन. डी. ए. के छत्तीसवें कोर्ट में शामिल होने के बाद से अखिल ने शीघ्र ही अपने बैच के अव्वल दर्जे के केडेट के रूप में शोहरत हासिल कर ली। देहरादून की इंडियन मिलिट्री अकादमी में उन्हें अपनी पसन्द की रेजीमेन्ट – आरमर्ड कोर – मिलने में कोई परेशानी नहीं हुई। उन दिनों फौज की इस प्रतिष्ठित कोर में स्थान पाना या तो राजघरानों के नवयुवकों के लिए जिनके पिता इस टैंक रिसालों में कार्य कर चुके थे और जिनका पेरेन्टल क्लेम था, के लिए सम्भव था या फिर टाप पोजीशन वाले केडेटों के लिए। अपने कोर्स के वरीयता क्रम में ऊपर के नम्बर के वरीयता क्रम और अपनी योग्यता के बलबूते पर अखिल ने आरमर्ड कोर में कमीशन प्राप्त करने के बाद सदैव शान से नौकरी की। फौज में वह सब प्रमुख तथा महत्वपूर्ण प्रशिक्षणों के लिए चुने गए। स्टाफ कॉलेज तथा आर्मी बार कॉलेजों के प्रतिष्ठित कोर्सों में उन्हें ट्रेनिंग के लिए अवसर मिला। अपनी रेजीमेन्ट में कमान्डेन्ट तथा स्टाफ में उन्होंने ब्रिगेड मेजर जैसे खास ओहदे सॅभाले। अहमद नगर स्थित आरमर्ड कोर्ट के सेन्टर तथा कॉलेज में प्रशिक्षक रूप में भी उनका योगदान सेना में सर्वविदित है।

कलकत्ता के फोर्ट विलियम स्थित पूर्वी कमान के मुख्यालय में आर्मी कमाण्डर के व्यक्तिगत स्टाफ अफसर के लिए भी वह चुने गए थे। यह ओहदा बहुत ही विश्वसनीय और काबिल अफसरों को दिया जाता है। योग्यता की इस परम्परा पर कायम रखते हुए उन्होंने बाद में एक आरमर्ड रेजीमेन्ट तथा बख्तरबन्द ब्रिगेड की कमान सॅभाली।

फौज से अवकाश ग्रहण करने से पहले आखिरी पारी के रूप में अखिल को बम्बई के महाराष्ट्र एवं गुजरात एरिया के डिप्टी जी0ओ0सी0 के पद पर नियुक्त किया गया। उस अवधि के दौरान् चोटी दर्जे के आला जनरल भी उनकी सूझ–बूझ, तर्जुबा तथा कर्तव्यनिष्ठा के कायल हो गए। अपने नाजुक

स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए अखिल ने अपनी जीवनचर्या में समुचित तब्दीली करते हुए भी अपने आवश्यक ताल्लुकातों को बरकरार रखा। यह संतोष की बात है कि अपने दोनों बच्चों की पूरी पढ़ाई करवाने और उन्हें चुनींदा केरियर में सेटिल करवाने के बाद उनके विवाह सम्पन्न करवा कर उन्होंने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से फुरसत हासिल की।

सजातीय भाईयों की मदद के लिए अखिल सदैव तैयार रहते थे। अपने विनोदपूर्ण स्वभाव तथा सहज व्यक्तित्व से वह अपने सब परिचितों में बहुत लोकप्रिय थे। बिरादरी के सब सदस्यों के लिए उनके घर का दरवाजा हमेशा खुला रहता था। बम्बई में कार्यकाल के दौरान उन्होंने कोलावा के फौजी क्लब में जातीय बान्धवों द्वारा विवाह के लिए उपयुक्त स्थान की मॉग होने पर यथासंभव पूरी मदद की।

अनिल अपने सब परिवार जन, सम्बन्धियों तथा सहयोगियों के लिए अमर हैं।